डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा आयोजित 'कोविड–19 : उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के नए आयाम' विषयक अंतराष्ट्रीय वेबिनार के उद्घाटन हेतु माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल का उद्बोधन

12 मई, 2020

———

1. प्रो0 सतीश कुमार त्रिपाठी, प्रेसिडेन्ट, बफैलो यूनिवसिटी, अमेरिका
2. प्रो0 अजय कपूर, प्रति कुलपति, स्वोनबर्न, यूनिवसिटी आफ टेक्नोलाजी, आस्ट्रेलिया
3. प्रो0 रिचड फोलैट, उप प्रति कुलपति, सेसेक्स यूनिवसिटी, यूनाइटेड किंगडम
4. प्रो0 स्टीफन ओडेन वार्ड, प्रो वाईस डीन, कैमनीज, यूनिवसिटी आफ टेक्नोलाजी, जर्मनी
5. प्रो0 संजय गोविन्द धांदे, पूर्व निदेशक आई0ई0टी0 कानपुर
6. प्रो0 एम0पी0 पुनिया, वाइस चेयरमैन, ए0आई0सी0टी0ई0, नई दिल्ली
7. प्रो0 थॉमस स्टोन, प्रधानाचाय टेक्नोलाजिकल यूनिवसिटी, डबलिन, आयरलैण्ड
8. श्रीमतो राधा एस0 चौहान, पमुख सचिव, प्राविधिक शिक्षा, उत्तर–प्रदेश
9. प्रो0 विनय कुमार पाठक, कुलपति, डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ
10. प्रो0 विनीत कंसल, वबिनार संयोजक एवं प्रति कुलपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ
11. इस अन्तराष्ट्रोय वेबिनार में शामिल कुलपति गण, संस्थानो के चेयरमैन, निदेशक, डीन और अन्य सम्मानित जन,

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय की कुलाधिपति के रूप में मैं विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वेबिनार में उपस्थित आप सभी महानुभाव का स्वागत करती हूँ।

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वेबिनार 'कोविड–19 : उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के नए आयाम' वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके बहुमूल्य विचार नई चुनौतियों को दूर

करने के लिए उपयोगी साबित होंगे और कोविड–19 के कारण उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने में "नए आयाम" को परिभाषित करेंगे।

कोरोना वायरस के प्रकोप से विश्व के सभी देशों की कार्यप्रणाली में समस्याएं उत्पन्न हुई है। स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा, व्यवसाय, अर्थव्यवस्था आदि सभी क्षेत्र प्रभावित हुये है। सभी देशों की सरकार, वहाँ के संस्थानों, चिकित्सकों, विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों द्वारा वर्तमान परिदृश्य के अनुरूप एवं भविष्य के लिये नये राह के निर्माण पर कार्य किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण की क्रमबद्धता बाधित होने से शिक्षकों सहित देश के भावी कर्णधारों के समक्ष भविष्य का प्रश्न अत्यंत स्वाभाविक है। निश्चित रूप से यह शिक्षा के चार स्तम्भों ज्ञानयोग, कर्मयोग, सहयोग और आत्मयोग का चरितार्थ करने का सही समय है।

वर्तमान समय में स्थानीय और वैश्विक शिक्षा का हर पहलू कोविड–19 के संकट से ग्रस्त है। इसने जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। आने वाले समय में इस भीषण संकट के फलस्वरूप जीवन जीने के नजरिए में बहुत बड़ा बदलाव होगा। हमें अपने अस्तित्व के लिए और कोविड–19 के वर्तमान और भविष्य के परिपक्ष्य में अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना होगा।

चूंकि सरकारें समाज को फिर से गतिशील बनाने और व्यवसाय को फिर से शुरू करने की कोशिश कर रहो हैं, इसलिए शैक्षणिक संस्थान एवं विश्वविद्यालय भी धीरे–धीरे अपने परिसरों को सामान्य शिक्षण प्रक्रिया शुरू करने हेतु फिर से खोलेंगे। फिर भी, सामाजिक एवं भौतिक दूरी (SOCIAL DISTANCING) के नियम समय–समय पर केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा जारी किये गये मानक के अनुरूप जारी रहेंगे, जिससे शैक्षिक परिसरों में अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया प्रभावित होती रहगी।

वर्तमान समय में शिक्षण प्रक्रिया में, ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था को बहुत ही कम समय में लाया गया। इसने शिक्षाशास्त्र के नए प्रारूपों को गति दी है। शिक्षाविदों तथा संस्थानों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु जबरदस्त पहल हुई है। पिछले कुछ सप्ताह में उच्च शिक्षा संस्थानों ने लचीलेपन के साथ, वर्तमान संकट से उपजी परिस्थिति से तालमेल बिठाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किये है। उच्च शिक्षा में संस्थागत लचीलापन लाने के लिए निश्चित रूप से हमें इस दिशा में कार्य करना होगा। विश्वविद्यालयों के पास समाज में विश्वसनीयता साबित करने का यह एक बड़ा अवसर है

कि वे समाज के लिए ज्ञान और विशेषज्ञता के स्रोत के रूप में कार्य कर सके। कोरोना वायरस से संबंधित व्यवधान शिक्षकों को शिक्षा के सुधार के क्षेत्र में पुनर्विचार करने का समय दे सकता है।

प्रौद्योगिकी भविष्य की पीढियों को शिक्षित करने में निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी एवं शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त डिजिटल खाई के अन्तराल को पाटने में एक उत्प्रेरक की भूमिका अदा करगी। वर्तमान समय में इन्टरनेट की वजह से ज्ञान महज एक माउस क्लिक की दूरी पर है। इस परिपेक्ष्य में निश्चित रूप से शिक्षक की भूमिका को नये सिरे से परिभाषित करने पर विचार करना होगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से दनिया भर में ऐसा कभी नहीं हुआ कि सभी स्कूल और शैक्षणिक संस्थान एक ही समय में और एक ही कारण से लॉकडाउन में गए हैं। जबकि हम जानते हैं कि इस वायरस का प्रभाव दूरगामी होगा एवं शिक्षा के क्षेत्र में दीघावधि में इसका क्या अभिप्राय हो सकता है, इस पर भी पुनविचार करने की महती आवश्यकता है।

वर्तमान संकट के दृष्टिगत विश्वभर के शिक्षा जगत स जुड हुए लोग एव अध्यापक भविष्य की पीढियों को शिक्षित कैसे किया जाए, इस पर चिन्तन–मनन करने की आवश्यकता पर बल दे रहे है। इस संकट के फलस्वरूप उपजी हुयी समस्त जटिलताओं एवं व्यवधान के सम्बन्ध में हमे आज अपनी युवा पीढ़ी को शिक्षित करने, स्वय से प्रश्न करन एवं उनके द्वारा लिये जा रहे प्रशिक्षण को तार्किकता से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर ढढने के लिए उन्हे प्रेरित करना होगा।

आज के परिदृश्य में सभी शिक्षाविद अपने दूर–दराज में स्थित विद्यार्थिया से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश में लगातार लगे हुए है। इस संदर्भ में यदि देखा जाए तो इस परिस्थिति के आंकलन और विश्लेषण करने का न यह केवल अच्छा अवसर है, बल्कि वाली पीढियों के अध्ययन की दशा एवं दिशा को तय करने में हमारी मदद करेगी।

कोविड–19 एक महामारी है, जो बताती है कि विश्व स्तर पर हम किस तरह एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। अलग–थलग मुद्दों और कार्यों जैसी संकल्पना का कोई अस्तित्व नही है। आने वाले दशकों में सफल लोगों को इस अंतर–संबंधता को समझने और सीमाओं के बंधन से मुक्त होकर तथा आपसो मतभेदों को समाप्त करते हुए विश्व स्तर पर सहयोगात्मक तरीके से काम करने की आवश्यकता है।

ज्ञान–धारक के रूप में एक शिक्षक की धारणा जो अपने विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करती है, अब 21वीं सदी की शिक्षा के उद्देश्य के लिए फिट नहीं है, विशेष रूप से सीखने के चार स्तम्भों के परिप्रेक्ष्य में अब जब छात्र अपने फान, टेबलेट अथवा कम्प्यूटर से ज्ञान अर्जित करने एवं तकनीकी कौशल सीखने में सक्षम है, तो अब कक्षा में एक शिक्षाविद की भूमिका को पुनःपरिभाषित करने की आवश्यकता है।

आज शिक्षा देने के लिए प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग आवश्यक हो गया है। शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध तकनीकी सामथ्य एवं संसाधन का उपयोग कर सभी क्षेत्रो के छात्रा हेतु दूरस्थ शिक्षा सामग्री के विकास के लिए बाध्य हो रहे है। छात्रो के लिए शिक्षा तक पहुँच सम्भव हो सके, इसके लिए दुनिया भर के शिक्षाविदो को नयी सम्भावनाओं के साथ–साथ नये तरीको एवं इन्ह पूर्ण तन्मयता के साथ पूरा करने की चेष्टा करनी होगी। महामारी की समाप्ति के उपरान्त हमारे उच्च एवं तकनीकी शिक्षा तंत्र के नियमित एवं प्रौढ शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन आने की सभावना है।

उल्लेखनीय है कि परिपक्व व्यस्क शिक्षार्थी छोटी से छोटी जानकारी में अधिक रूचि रखते है, जो उन्हे विशिष्ट ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की अनुमति देते है। शायद कोविड–19 महामारी, विश्वविद्यालयो के लिए नये माडल विकसित करने का एक व्यावसायिक अवसर भी हो सकता है, जो आज तक व्यापक पैमाने पर उपलब्ध नहीं हुआ था। इटरनेशनल विजिटिंग प्रोफेसर अपने पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन पढाने एवं घर बैठे अन्तराष्ट्रीय अनुभव प्रदान करने में महती भूमिका अदा कर रहे है, जो प्रशंसनीय है।

इस अवसर पर मैं डा0ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय द्वारा कोविड–19 महामारी के दौरान दो लाख से अधिक छात्रो के प्रयोगार्थ विश्वविद्यालय के ई0आर0पी0 के माध्यम से ई–पाठ्य सामग्री, वोडियो लेक्चर, चिकित्सीय शोध संस्थानो एवं विश्वविद्यालयो के साथ सहकार्य में चिकित्सीय उपयोग के अभिनव उत्पाद के विकास, आनलाइन आइडियाथान प्रतियोगिता एवं कलाम अन्न क्षेत्र के नाम से सामुदायिक पाकशाला चलाने जैसे सामाजिक प्रासंगिकता के कार्यो हेतु विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 विनय कुमार पाठक की प्रशसा करना चाहगी।

मै वेबिनार के माध्यम से इस व्याख्यान माला की सफलता की कामना करती हू और सभी को शुभकामानाय देती हू।

जय हिन्द–जय भारत।